प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती है। यह एक अदम्य इच्छा शक्ति से आती है।
-महात्मा गांधी

अपने दूसरे शपथ ग्रहण समारोह में बिम्सटेक देशों के नेताओं को आमंत्रित कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी 'पहले पड़ोस' और 'ऐक्ट ईस्ट पॉलिसी' को तो रेखांकित किया ही है, पाकिस्तान को न बुलाकर स्पष्ट संदेश भी दिया है।

बिम्सटेक के साथ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज बिम्सटेक देशों के प्रमुखों और किर्गिस्तान के राष्ट्रपति तथा मारीशस के प्रधानमंत्री की मौजूदगी में अपने दूसरे कार्यकाल के लिए शपथ लेंगे, जिसे उनकी 'पहले पड़ोस' और 'ऐक्ट ईस्ट पॉलिसी' की निरंतरता में देखा जा सकता है। पांच साल पहले 26 मई, 2014 को पहली बार प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी ने दक्षेस देशों के नेताओं की मौजूदगी में शपथ ली थी, जिनमें पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज शरीफ भी शामिल थे। लेकिन उतार-चढ़ाव भरे दौर से गुजरते हुए भारत के पाकिस्तान से रिश्ते सितंबर, 2016 में तब बिगड़ गए, जब पाक समर्थित आतंकवादियों ने उरी स्थित भारतीय सेना के एक शिविर पर हमला किया था। नतीजतन भारत ने नवंबर, 2016 में इस्लामाबाद में हुए दक्षेस शिखर सम्मेलन का बहिष्कार कर दिया था और उसके इस कदम का अन्य सदस्य देशों ने भी समर्थन किया, जिससे पाकिस्तान अलग-थलग पड़ गया। दरअसल पाकिस्तान दक्षेस का इस्तेमाल दबाव की कूटनीति के लिए करता रहा है, जैसा कि उसने 2014 में दक्षेस देशों के बीच सड़क और रेल संपर्क से संबंधित समझौते पर अड़ंगा लगा दिया और पश्चिम एशिया तक भारत की सीधी पहुंच रोक दी। यही नहीं, दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा) को लेकर भी उसका रवैया मनमाना रहा है और उसने भारत को कभी तरजीही देश (एमएफएन) का दर्जा नहीं दिया, जबकि पुलवामा में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने इसी साल उससे यह दर्जा वापस लिया। जाहिर है, मोदी के शपथ ग्रहण समारोह के लिए पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान को आमंत्रित न कर भारत ने कड़ा संदेश दिया है कि उसे आतंकवाद पर अपना रुख स्पष्ट करना होगा। बिम्सटेक में भारत के साथ ही बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका, थाईलैंड, नेपाल और भूटान शामिल हैं और इनका साझा जीडीपी 28 खरब डॉलर के करीब है, जिससे इनकी आर्थिक ताकत को समझा जा सकता है। अपने पिछले कार्यकाल में ही मोदी ने एकाधिक मौके पर यह जता दिया था कि बिम्सटेक उनकी क्षेत्रीय नीति में क्या महत्व रखता है। 2017 की शिखर बैठक में उन्होंने कहा था, 'बिम्सटेक हमारी विदेश नीति की प्रमुख प्राथमिकताओं-पड़ोसी पहले और ऐक्ट ईस्ट को पूर्ण करने का एक स्वाभाविक मंच है।' वास्तव में यह ऐसा पुल है, जो भारत को आसियान देशों के और करीब ला सकता है।

विदेश नीति की बुनियाद पर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज शाम अपने दूसरे कार्यकाल के लिए शपथ ग्रहण करेंगे, ऐसे में यह स्पष्ट है कि अगर भारत को विश्व व्यवस्था में अपना महत्व फिर से हासिल करना है, तो विदेशी मामलों के लिए उनकी सरकार से पर्याप्त समय देने की अपेक्षा की जाएगी। 'पड़ोसी पहले' की नीति को ध्यान में रखते हुए ही प्रधानमंत्री मोदी ने इस बार अपने शपथ ग्रहण समारोह में बिम्सटेक देशों (बंगाल की खाड़ी के आसपास स्थित देशों) के नेताओं को आमंत्रित किया है।

बिम्सटेक देशों के नेताओं को आमंत्रित करने का खास महत्व है। सबसे पहला तो यही कि पाकिस्तान को अलग-थलग करना है। पिछले कुछ वर्षों से सार्क में पाकिस्तान रुकावटें डाल रहा था, जिसके चलते नई दिल्ली में यह विचार हो रहा था कि किस तरह से हम पाकिस्तान को छोड़ अपने बाकी पड़ोसियों से बेहतर संबंध कायम करें। इस लिहाज से बिम्सटेक देशों का चयन महत्वपूर्ण है। दूसरी बात भारत के पूर्वी पड़ोसी देशों में ही विकास हो रहा है, पश्चिमी पड़ोसी देशों में तो उथल-पुथल का माहौल है। बिम्सटेक में वे सभी पूर्वी पड़ोसी देश शामिल हैं, जिससे भारत को फायदा हो सकता है।

बिम्सटेक देशों की आबादी दुनिया की आबादी का लगभग 22 फीसदी है और इन देशों की कुल जीडीपी 28 खरब डॉलर है, इसलिए इनके साथ बेहतर रिश्ते होने पर व्यापार का भी फायदा हो सकता है। इसके अलावा पिछले कुछ वर्षों में इन देशों में चीन का दबाव बढ़ा है, जिसे भारत कम करना चाहता है। इस तरह इन देशों को आमंत्रित करके प्रधानमंत्री मोदी ने रणनीतिक कदम उठाया है।

मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में बिम्सटेक के नेताओं की मौजूदगी का खास महत्व है। इसमें वे सभी पूर्वी पड़ोसी देश शामिल हैं, जिनसे भारत को फायदा हो सकता है।

मारूफ रजा, सामरिक विश्लेषक

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने इस क्षेत्र में शांति के लिए मोदी के साथ काम करने की इच्छा दोहराई, मगर इसके बावजूद उन्हें इस महत्वपूर्ण आयोजन में आमंत्रित नहीं किया गया है। असल में सवाल यह है कि क्या पाकिस्तान आतंकवाद को गुपचुप तरीके से पनाह देने की नीति छोड़कर ईमानदारी के साथ आतंकवाद से निपटने को तैयार होगा, जैसा कि मोदी जोर देते हैं? इमरान खान के लिए ऐसा करना आसान नहीं होगा, क्योंकि वहां के भारत विरोधी जिहादी समूह पाकिस्तानी सेना के लिए सामरिक संपत्ति हैं, जिन पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है। और जैसा कि मोदी ने अपने पहले कार्यकाल से सीखा है, जब तक पाकिस्तान के आतंकी समूह कायम हैं, पाकिस्तान के साथ औपचारिक जुड़ाव निरर्थक कवायद है।

भारत को सबसे बड़ा फायदा जून के अंत में जापान में जी-20 देशों के प्रमुखों के साथ मोदी द्वारा अपने संबंधों को नवीनीकृत करने से मिल सकता है। मोदी को अपनी विकास योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए निवेश की जरूरत है और जी-20 देशों की हिस्सेदारी वैश्विक जीडीपी में 85 फीसदी और विश्व व्यापार में 75 फीसदी है।

प्रधानमंत्री के रूप में अपने पहले कार्यकाल में पिछले पांच वर्षों में मोदी ने विदेशों से औसतन 52.2 अरब डॉलर वार्षिक निवेश हासिल किया। लेकिन मोदी को निश्चित रूप में भारत में अधिक निवेश लाने का लक्ष्य बनाना चाहिए। अगर भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी सैन्य केंद्रित संबंधों से आगे बढ़ने जा रही है, तो भारत को देने से ज्यादा लेने की ट्रंप की इच्छा के बावजूद विशेष रूप से अमेरिका के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को आगे बढ़ाना चाहिए। इस समय भारत-अमेरिका संबंधों का फोकस मुख्य रूप से भारत को अमेरिकी हथियारों की बिक्री और आतंकवाद विरोधी पहल पर है। लेकिन जैसा कि हमने देखा है, आतंकवाद को समर्थन देने और प्रायोजित करने को लेकर पाकिस्तान को दंडित करने के मामले में अमेरिकी प्रशासन का रवैया सुस्त रहा है, भले ही उसने मसूद अजहर को संयुक्त राष्ट्र से आतंकवादी घोषित करवाने में कड़ी मेहनत की।

अगले पांच वर्षों में भारत को सबसे बड़ी सामरिक चुनौती पाकिस्तान से नहीं, बल्कि चीन से मिलने वाली है। कई दशकों से चीन ने भारत की क्षमता को बेअसर करने और इस्लामाबाद की आर्थिक व सैन्य मदद कर पाकिस्तान का इस्तेमाल करते हुए नई दिल्ली को उलझाए रखने का काम किया है। यहां तक कि हमारी सीमाओं के साथ उसने अपनी आधारभूत संरचनाओं का काफी विकास किया है, और हिमालय तथा हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की सैन्य क्षमता मौजूद है।

लेकिन दो एशियाई दिग्गजों की शक्ति में असमानता सबसे अधिक अर्थव्यवस्था को लेकर है। चीन की अर्थव्यवस्था भारत से पांच गुना ज्यादा है और तकनीकी दिग्गज के रूप में उनकी निरंतर प्रगति अमेरिका को टक्कर दे रही है। अब यह मोदी सरकार को फैसला करना है कि वह चीन की हुआवेई कंपनी के साथ जाए या 4 जी से 5 जी के लिए वेस्टर्न नेटवर्क का रुख करे, क्योंकि इससे हमारी सैन्य और तकनीकी क्षमता पर असर पड़ेगा। कहा जाता है कि 5 जी नेटवर्क कृत्रिम बुद्धिमत्ता, थिंग्स ऑफ इंटरनेट और स्वायत्त फ्लेटफार्म के जरिये भारत की ज्ञान अर्थव्यवस्था को बदल देगा, ये सभी सैन्य और असैन्य प्रौद्योगिकी को करीब ले आएंगे। इस प्रकार भारत जो भी फैसला लेगा, उसकी विदेश नीति के लिए निहितार्थ होंगे।

अमेरिका द्वारा ईरान को दंडित करने के फैसले पर अड़े रहने के कारण खाड़ी क्षेत्र में तनाव बढ़ने का नई दिल्ली पर भी असर पड़ेगा-खासकर भारत की ऊर्जा सुरक्षा जरूरतों और खाड़ी क्षेत्र में 60 लाख से ज्यादा रहने वाले भारतीयों के भाग्य को लेकर। विश्लेषकों का कहना है कि 2040 तक भारत तेल आयात के मामले में चीन को पीछे छोड़कर सबसे बड़ा तेल आयातक बन जाएगा। इसलिए भारत को पश्चिम एशिया में अपने हितों को सुरक्षित रखना चाहिए, क्योंकि अरब देश भारत के लिए कच्चे तेल का बड़ा स्रोत हैं, जहां से भारत अपनी जरूरत का दो तिहाई तेल आयात करता है, लेकिन इसमें धीरे-धीरे कमी आ सकती है, क्योंकि भारत इसके लिए अफ्रीकी उत्पादों पर ध्यान केंद्रित करने लगा है। लेकिन जिस तेजी से भारत की ऊर्जा मांग बढ़ रही है (यह अभी विश्व का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है, जिसकी आयात निर्भरता 2031 तक बढ़कर 90 फीसदी होने का अनुमान है), यह एक बड़ी दीर्घकालीन चुनौती होगी। अगर भारत को अपनी पूरी क्षमता के साथ विकास करना है, तो ऊर्जा आपूर्ति को सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता में होना चाहिए।

अंतर्ध्वनि

>> हुआन रामोन हिमेनेज

पूर्णता की पिपासा से गहरा सामाजिक बदलाव होता है

हम अपने देश का 'पुनर्निर्माण' बिना उसकी भाषा के पुनर्निर्माण के नहीं कर सकते। लोगों के बात करने का लहजा बदलिए और देखिए कि आपने उनके व्यवहार को बदल दिया है। एकदम सही-सही बोलिए और तब आप कम बोलेंगे, शायद बिल्कुल नहीं—बोलने से बेहतर है, खामोश रहना। बोलने से बेहतर चुप रहना, चुप रहने से बेहतर स्वप्न देखना, स्वप्न देखने और सोचने से बेहतर है पढ़ना। जब हम पढ़ते हैं, चुप्पी स्वतः शांत हो जाती है, और हम किसी के संग सोच या स्वप्न देख सकते हैं।

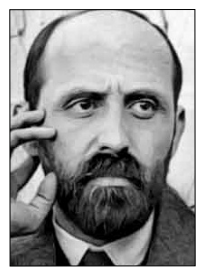

बढ़िया काम करने के लिए अनिवार्य है कि हम नॉस्टेल्जिया को पराजित करें—समय में कहीं और रहने की अस्पष्ट इच्छा को परास्त करें और वर्तमान को पकड़ कर रखें, और वर्तमान का पकड़ में आना मुश्किल है। जब हम उसकी तरफ हाथ बढ़ाते हैं, हमारी समस्याएं हमें कहीं और अतीत में या भविष्य में खींच ले जाती हैं। काम के क्षणों को परिपक्व करने का एक तरीका है—उन्हें गुरुता प्रदान करने का एक ढंग। काम के जरिये हम वर्तमान को टिकाऊपन की दावत देते हैं। अपने काम के जरिये वर्तमान को ग्रहण करो और फिर देखो, तुम्हारा काम हमेशा वर्तमान रहेगा। चीजों पर हम दबाव न डालें, हर चीज को अपने मुकर्रर वक्त पर आने दें, अपने निराले तरीके से, अपनी लयों को हमारी लयों में विलीन करते हुए। अगर आप किसी और चीज के लिए एक को छोड़ते हैं, तो लय बदलिए और उन तूफानी लयों से सचेत रहिए, जो हमें खींचकर नीचे घसीटे लिए जाती हैं। सच्चे लेखक का सिद्धांत : अच्छा काम, अच्छी कविता की तरह संक्रामक होता है। इसका आरंभ एक खामोश कमरे में होता है। फिर यह लहर की तरह समाज में फैलता है और सामाजिक जीवन को बदल डालता है। एक व्यक्ति की पूर्णता की पिपासा से गहरा सामाजिक बदलाव जन्म ले सकता है।

-नोबेलजयी अंदलूसियन कवि

मंजिलें और भी हैं

>> डॉ. सुनील कुमार हेब्बी

कार को मोबाइल क्लीनिक में बदला, नौकरी भी छोड़ दी

मेरा जन्म कर्नाटक के बीजापुर में एक किसान परिवार में हुआ। मैंने बचपन से ही अपने गांव में लोगों को मूलभूत सुविधाओं के लिए संघर्ष करते देखा। प्रारंभिक पढ़ाई के बाद मेडिकल की पढ़ाई के लिए मुझे लोन लेना पड़ा। पढ़ाई के बाद मुझे बंगलूरू के एक निजी अस्पताल में नौकरी मिल गई। एक दिन मैं अस्पताल से ड्यूटी करके वापस लौट रहा था, तो रोड पर दुर्घटना में घायल एक बच्चे को बेहोश देखा। कोई उसकी मदद के लिए आगे नहीं आ रहा था। मैंने तुरंत उस बच्चे को प्राथमिक उपचार दिया और उसे हॉस्पिटल पहुंचाया। इस घटना के कुछ दिन बाद मुझे बच्चे के परिजनों ने अपने घर खाने पर बुलाया। उन्हें मना करते हुए कहा कि, मैंने तो सिर्फ अपना फर्ज निभाया। लेकिन उस बच्चे की मां ने बहुत सम्मान के साथ मुझे बुलाया। उनकी आंखों में आंसू थे, कहा कि अगर तुम न होते तो शायद यह मर जाता। उस दिन मुझे एहसास हुआ कि हमारे देश में न जाने कितने लोग सही समय पर उपचार न मिलने के कारण मर जाते हैं। खासतौर से वे जो अस्पतालों के महंगे खर्चे नहीं उठा सकते। इस घटना ने मुझे प्रभावित कर दिया। मैंने अपने स्तर पर ही कुछ करने की ठानी। मैं अपनी नौकरी नहीं छोड़ सकता था, क्योंकि मुझे अपना घर तो संभालना ही था, साथ ही गरीबों की मदद करने के लिए भी फंड्स की जरूरत होती। इसलिए अपने छुट्टी वाले दिनों को मैंने जरूरतमंद और ग्रामीणों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

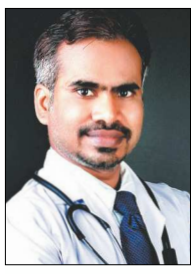

बंगलूरू व आस-पास में 720 मेडिकल कैंप लगाए हैं। करीब 36,000 लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिला है।

शुरू के दो-तीन महीने कुछ दोस्तों ने भी मेरा साथ दिया। लेकिन फिर सभी अपने कामों में व्यस्त हो गए। मैं समझ गया था कि इस तरह के काम के लिए अकेले ही आगे बढ़ना है, इसलिए मैंने अपनी कार को ही मोबाइल क्लीनिक में बदल दिया और सभी जरूरी मेडिकल टूल, फर्स्ट ऐड किट, और दवाइयां आदि रखने लगा। इस दौरान मैंने मातृ श्री फाउंडेशन की शुरुआत की। जिसका उद्देश्य देश के कोने-कोने तक अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाना है। अब जैसे ही मुझे छुट्टी मिलती है बंगलूरू के आस-पास के ग्रामीण इलाकों में जाकर मेडिकल कैम्प लगाता हूं, और लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करता हूं। वर्ष 2014 में मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी और बंगलूरू के सर्जापुर में 'आयुष्मान भव क्लीनिक' के नाम से एक छोटा-सा स्वास्थ्य केंद्र शुरू किया। यहां आने वाले ज्यादातर लोग गरीब समुदायों से होते हैं। मेरी कोशिश रहती है कि कम से कम रुपये में, उन्हें अच्छी सुविधाएं दूं। जो लोग रुपये देने में असमर्थ होते हैं, उनका इलाज मुफ्त में करता हूं। अब तक बंगलूरू और आस-पास के क्षेत्रों में लगभग 720 मेडिकल कैंप लगवा चुका हूं। साथ ही 36,000 से ज्यादा लोगों तक स्वास्थ्य मदद पहुंचाई है। वैसे तो अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं हर देश में मूलभूत मानवाधिकार हैं, लेकिन भारत में ऐसा नहीं है। बाकी मूल अधिकारों की तरह हमारा संविधान स्वास्थ्य का अधिकार नहीं देता है। आज भी हमारे देश में ज्यादातर लोग जरूरी स्वास्थ्य सुविधाओं से महरूम हैं। इसीलिए अपने मोबाइल डॉक्टर क्लीनिक से पूरे देश में 'राईट टू हेल्थ यात्रा' करने का मेरा लक्ष्य है, ताकि हमारे देश में सभी लोगों को समान रूप से अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं का अधिकार मिले। मेरे अभियान की सफलता इसी में निहित है कि, इससे देशभर के अच्छे-अच्छे डॉक्टर जुड़ रहे हैं, जिनका लक्ष्य गरीबों को सही इलाज देना है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

बाजारों में यह तूफान कैसा

मोदी के दोबारा जीतने से निवेशकों में उत्साह पनपा है और अनिश्चितता का माहौल खत्म हो गया है। शेयर बाजार भावनाओं पर चलते हैं और अभी ये शीर्ष पर हैं। लेकिन सरकार को आईएल ऐंड एफएस के ध्वस्त होने से उपजी चुनौतियों से भी निपटना है।

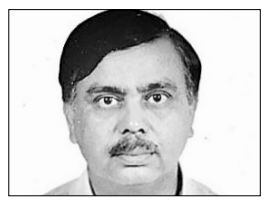

मधुरेन्द्र सिन्हा

शेयर बाजार नित नई छलांग लगा रहे हैं। जिस दिन एग्जिट पोल आए उसके अगले दिन ही बाजार में बीएसई सूचकांक में 1400 अंकों की उछाल आई। और जब 23 मई को अंतिम परिणाम आने लगे तो शेयर बाजार इतिहास बना गया। बीएसई सूचकांक ने 40,000 का आंकड़ा छूकर एक रिकॉर्ड बनाया। उधर पचास शेयरों वाला निफ्टी भी 12,000 के जादुई आंकड़े को पार कर गया। हालांकि दोनों में ही गिरावट आई है, लेकिन यह ऊपर जाने को उतारू है। पिछली बार भी जब नरेंद्र मोदी सत्ता में आए तो शेयर बाजारों में शानदार तेजी आई थी। इसका ही नतीजा है कि पिछले पांच वर्षों में निवेशकों का धन दुगना हुआ। जिन लोगों ने उस समय एक लाख रुपये बाजार में लगाए थे उनके पैसे बढ़कर 1.70 लाख रुपये तक हो गए।

कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि अगर मोदी सरकार आर्थिक नीतियों पर जमकर काम करती रही, तो वह दिन भी दूर नहीं कि बीएसई सूचकांक 50 हजार तक पहुंच सकता है। शेयर बाजारों की यह खासियत है कि वह मिली-जुली सरकार पसंद नहीं करते। उनके लिए एक पार्टी का शासन अच्छा होता है, क्योंकि आर्थिक नीतियां बदलती नहीं हैं। राजनीतिक स्थायित्व निवेशकों को दीर्घावधि के लिए निवेश करने को प्रोत्साहित करता है। छोटे निवेशकों के लिए भी यह लाभदायक होता है और उन्हें रिटर्न मिलता रहता है। मोदी की जबर्दस्त जीत से निवेशकों में उत्साह पनपा है और अनिश्चितता का माहौल खत्म हो गया है। शेयर बाजार भावनाओं पर चलते हैं और इस समय यह अपने अधिकतम पर हैं। इससे विदेशी निवेशक निश्चित तौर पर आकर्षित होंगे। इस समय हमारी अर्थव्यवस्था को बड़े पैमाने पर निवेश की बहुत जरूरत है और यह न केवल जीडीपी में बढ़ोतरी करेगा, बल्कि रोजगार को भी बढ़ावा देगा। यह मोदी सरकार ही थी, जिसने कारोबारी सुगमता (इज ऑफ डूइंग बिजनेस) में बड़ी छलाग लगाई और भारत को 77वें स्थान पर ला खड़ा कर दिया है। भारत में निवेश करना और आसान अगर हो जाए तो कोई कारण नहीं कि यहां विदेशी निवेश और बड़े पैमाने पर होगा। वैसे भी चीन में अब निवेशक पैसे लगाना नहीं चाहते हैं। वहां अर्थव्यवस्था धीमी हो गई है और निवेशक कतरा रहे हैं।

इस सरकार के सामने इस समय कई बड़ी चुनौतियां भी हैं और उनका निराकरण समय रहते करना होगा नहीं, तो शेयर बाजारों में गिरावट आ सकती है। ऐसे में विपक्ष को एक मौका मिल जाएगा और वह इसे मुद्दा बनाएगा। वित्तीय संस्था आईएल ऐंड एफएस के लगभग ध्वस्त होने से वित्तीय क्षेत्रों में जो हाहाकार मचा है, उससे पूरी तरह से बाहर निकलना भी जरूरी है। यह मामला 91,000 करोड़ रुपये का है और इसकी जद में बड़े-बड़े इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट हैं, जो लटक जाएंगे। इसके अलावा वित्तीय संस्थाओं को भी धक्का लगेगा। इसका असर अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र पर पड़ सकता है। पिछले दिनों भारतीय मुद्रा रुपये में भी गिरावट आई थी जो मोदी सरकार के दोबारा मजबूती से वापस आने के कारण मजबूत हो गया है। कच्चे तेल की कीमतें घट नहीं रही हैं और ईरान-अमेरिका के बीच लड़ाई के हालात बनने के कारण भारत के सामने आपूर्ति की समस्या हो गई है। उधर अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते तकरार का असर सारी दुनिया पर दिखाई पड़ रहा है। अगर अमेरिका चीन के खिलाफ कड़े व्यापारिक कदम उठाएगा तो भारत पर भी दबाव पड़ेगा और हो सकता है कि उसका असर शेयर बाजारों पर पड़ेगा।

अब बड़ा सवाल है कि क्या इस तेजी से बढ़ते हुए बाजार में निवेश करना उचित होगा? इसका जवाब हां और न दोनों ही होगा, क्योंकि शेयर बाजारों के बारे में कोई भविष्यवाणी उचित नहीं होगी। निवेशकों को यह देखना होगा कि आने वाले समय में सरकार क्या कदम उठाएगी और क्या उसके परिणाम होंगे।

खुली खिड़की

प्रसिद्ध फुटबॉलरों की मार्केट वैल्यू

विश्व के कई देशों में फुटबॉल पसंदीदा खेल है। पूरी दुनिया में इसके प्रशंसकों की संख्या अरबों में है। शीर्ष फुटबॉलरों का बाजार मूल्य नीचे दिया गया है।

राशि करोड़ पाउंड में

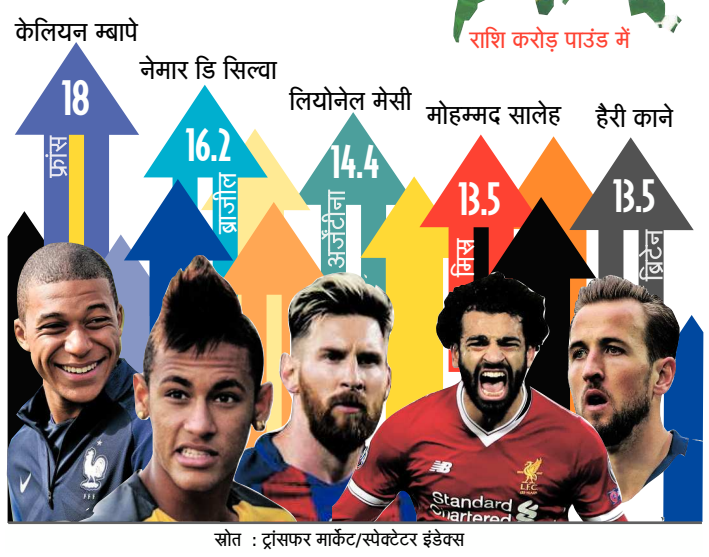

स्रोत : ट्रांसफर मार्केट/स्पेक्टेटर इंडेक्स

संयम का भ्रम

प्रातःकाल पुष्यमित्र के अश्वमेध की पूर्णाहुति हो चुकी थी। रात को अतिथियों के सत्कार में नृत्योत्सव था। जब यज्ञ के ब्रह्मा महर्षि पतंजलि उसमें उपस्थित हुए, उनके शिष्य चैत्र के मन में गुरु के व्यवहार के औचित्य के विषय में शंकाशूल चुभ गया। उस दिन से उसका मन महाभाष्य और योगसूत्रों में नहीं रमा। अंत में एक दिन जब महर्षि चित्तवृत्ति-निरोध के साधनों पर प्रवचन कर रहे थे, चैत्र ने प्रासंगिक प्रश्न किया, भगवन्! क्या नृत्य-गीत और रास-रंग भी चित्तवृत्ति-निरोध में सहायक हैं ? पारदर्शी पतंजलि साभिप्राय मुस्कराए और बोले, वत्स! वास्तव में तुम्हारा प्रश्न तो यह है कि क्या उस रात मेरा सम्राट के नृत्योत्सव में सम्मिलित होना संयम-व्रत के विरुद्ध नहीं था ? संयम के सच्चे अर्थ को तुम नहीं समझे।

सत्संग

सुनो, आत्मा का स्वरूप है रस। उस रस को परिशुद्ध और अविकृत रखना ही संयम है। विकृति की आशंका से रस-विमुख होना ऐसा ही है, जैसे कोई गृहिणी भिखारियों के भय से घर में भोजन पकाना बंद कर दे अथवा कोई कृषक भेड़-बकरियों के भय से खेती करना छोड़ दे। यह संयम नहीं, पलायन है- आत्मघात का दूसरा रूप है। आत्मा को रस-वर्जित बनाने का प्रयत्न ऐसा ही भ्रमपूर्ण है, जैसे जल को तरलता से अथवा अग्नि को ऊष्मा से अलग करने का प्रयास। अतएव इस भ्रम में कभी न फंसो।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

हर्ष और बूढ़े भिखारी की सीख

यह कहानी एक भिखारी की है, जिसने एक संपन्न आदमी को सबक सिखा दिया।

ओबेरॉय मॉल के सामने अपनी गाड़ी में हर्ष पत्नी नीता और बेटे रोहन का बहुत देर से इंतजार कर रहा था। उन्हें आने में दस मिनट बाकी थे। हर्ष के मन में विचार आया कि बेकार बैठने से अच्छा है कि अपनी गाड़ी ही साफ कर ली जाए। यह सोचकर वह गाड़ी से बाहर निकला और उसे साफ करने में जुट गया। कुछ दूरी पर एक भिखारी था। वह हर्ष की तरफ बढ़ रहा था। भिखारी की हालत ठीक नहीं लग रही थी। अपनी तरफ भिखारी को आते देखकर हर्ष यह समझ चुका था कि उसके पास खाना खाने के पैसे भी नहीं होंगे। लेकिन उस दिन हर्ष का उस भिखारी से बात करने का बिल्कुल मन नहीं था। जबकि वह भिखारी हर्ष की ओर लगातार देख रहा था। पर वह हर्ष के पास नहीं आया, और न ही उससे कुछ बोला। कुछ सोचता हुआ वह भिखारी पास के बस स्टॉप की ओर बढ़ा और चुपचाप वहां जाकर बैठ गया। हर्ष अपनी गाड़ी साफ करता रहा। अचानक हर्ष ने मुड़कर देखा, तो उसकी नजर भिखारी से मिल गई। भिखारी ने कहा-'आपकी गाड़ी बहुत अच्छी है।' हर्ष ने हां में सिर हिला दिया। हर्ष हैरान था कि वह भिखारी कुछ मांग नहीं रहा था। उसने भिखारी से पूछा-'क्या आपको किसी प्रकार की मदद की जरूरत है?' उसके बाद जो कुछ भिखारी ने कहा, उसने हर्ष की जिंदगी बदल दी। उसने कहा- 'हम सभी को किसी न किसी की मदद की जरूरत है। है न?' यह सुनकर हर्ष स्तब्ध रह गया। हम कितने भी समृद्ध क्यों न हों जाएं, फिर भी हमें किसी न किसी मदद की जरूरत है। उसी तरह से, हम कितने भी कमजोर क्यों न हों, एक दूसरे की मदद कर सकते हैं। फिर वह चाहे आर्थिक हो, शारीरिक, मानसिक या फिर मानवीय। किसी का नजरिया बदलना, उत्साहवर्धन करना, सही मार्ग दिखाना भी तो मदद ही है।

हम एक-दूसरे की मदद से ही जीवन में आगे बढ़ते हैं।